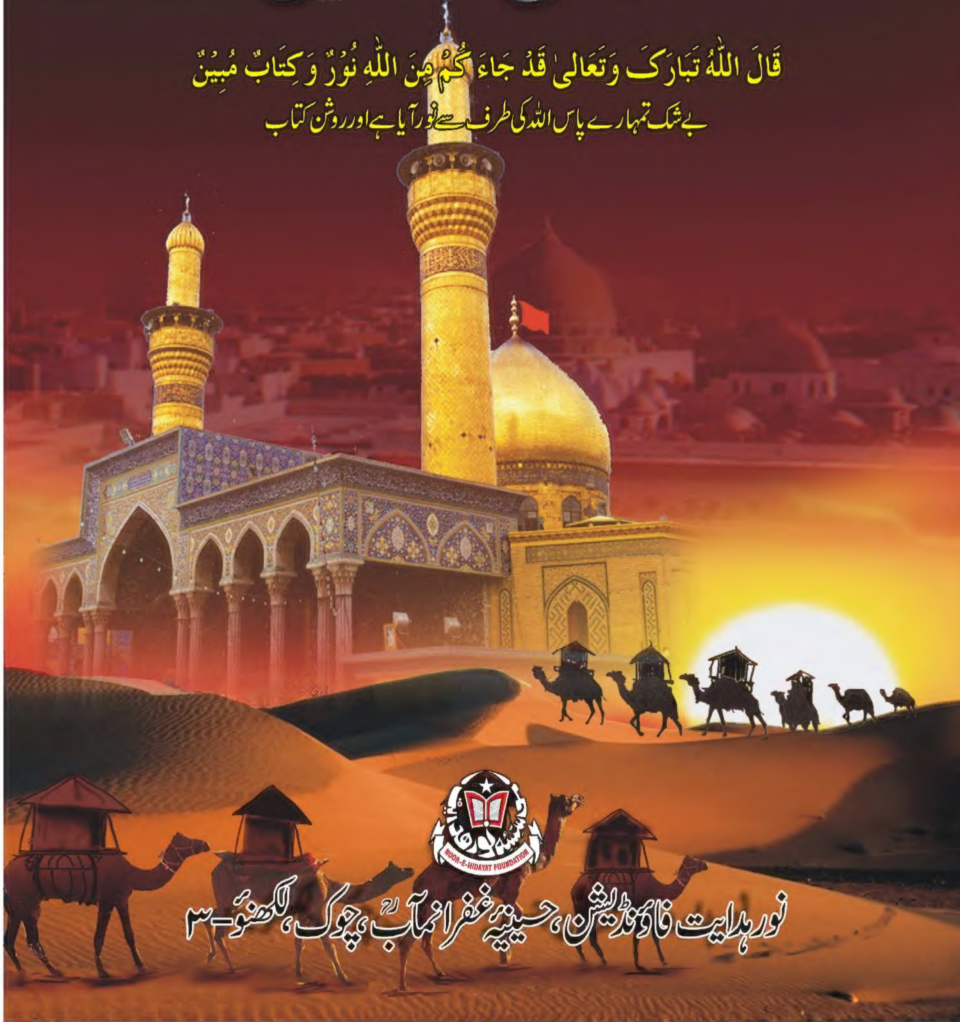
جولائی ۲۰۱۱ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ



R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

July 2011





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 7 — अंक 12

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जून–2011

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ – 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/-

Annual 200/-



R.N.I. No.

UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.

SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.com

www.al-ijtihaad.com



E_mail:

noorehidayat@yahoo.com

noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर

2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर

3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर

4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

जुलाई 2011ई०

रजबुल मुरज्जब 1432हि० शाबानुल मुअज़्ज़म 1432हि०

किस्त-4

उसूले दीन

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़्वी ताबा सराह

बारह इमाम

नीचे रसूलुल्लाह के सच्चे ख़लीफ़ाओं के नाम और संक्षिप्त जीवनियाँ दिये जा रहे हैं।

पहले इमाम

अली नाम, पिता अबूतालिब माँ फ़ातिमा बिन्त (पुत्री) असद। अबूतालिब के पिता अब्दुल मुत्तलिब थे जो रसूलुल्लाह के दादा थे इस तरह अली रसूल के सगे चचा के बेटे थे।

जन्म

आप रसूलुल्लाह के जन्म के तीस वर्ष के बाद पैदा हुए। आपका जन्म ख़ास काबे के अन्दर हुआ यह विशेषता आपके अलावा किसी और को प्राप्त नहीं हुई।

पालन-पोषण

हज़रत अली बचपन ही से रसुलुल्लाह के साथ रहे इस लिए कि आप के पिता अबूतलिब ही रसुलूल्लाह के पालन पोषण करने वाले थे और जब हज़रत अली केवल सात वर्ष के थे तो रसूलुल्लाह ने अपने चचा से इनको मांग कर अपनी सुरक्षा में ले लिया था। उसके बाद हज़रत अली रसूलुल्लाह के अन्तिम समय तक उनके साथ रहे।

इस्लाम का प्रचार

जब हज़रत रसूल के पास अल्लाह का पहला संदेश पहुँचा तो हज़रत ख़दीजा (रसूल की पहली पत्नी) के अलावा सबसे पहले हज़रत अली ने आपके सच्चे रसूल होने की गवाही दी। कुटुम्ब वालों को इस्लाम का संदेश पहुँचाने के समय भी आप ही ने सहायता का वादा किया। जब रसूल ने हिजरत की (मक्का छोड़कर मदीना चले गये) तो अल्लाह की आज्ञा से अली बिन अबीतालिब को अपनी जगह छोड़ा। अली खिंची तलवारों के बीच में रसूल के बिछौने पर आराम और सन्तोष के साथ सोते रहे। मदीना आकर जब मुश्रिकों से और इस्लाम के शत्रुओं से जिहाद का सिलसिला शुरु हुआ तो बड़ी ख़तरनाक लड़ाईयों में अली की तलवार ने शत्रुओं को परास्त किया। इस प्रकार इस्लाम के प्रचार में आरम्भ से अन्त तक अली रसूलुल्लाह के बाहु-बल बने रहे और सभा और रण दोनों में महत्वपूर्ण सेवाएं करते रहे।

उनके शुभ गुण

ज्ञान में आप का स्थान वह था कि रसूल के तमाम साथी (सहाबी) आपके आगे सर झुकाते थे और आप से धार्मिक समस्याओं में राय लेते थे। आपके व्यावहारिक व मानसिक उत्तमता के दोस्त और दुश्मन सब ही क़ायल थे। और हज़रत रसूल ने सदा आपके शुभ गुण मुसलमानों के सामने बयान किए और हर प्रकार से यह स्पष्ट किया कि उनका जैसा कोई दूसरा नहीं है।

अत्याचार पर सब्र

पैग़म्बर साहब के देहान्त के बाद एक पहले से सदी-बदी स्कीम के अन्तर्गत हज़रत अली की ख़िलाफ़त को आम मुसलमानों ने अस्वीकार किया और आप से शासन का अधिकार छीन लिया गया जिस पर आप ने इस्लाम धर्म के हित के हेतु सब्र किया। फिर भी रसूलुल्लाह की ख़िलाफ़त की वास्तविक ज़िम्मेदारियाँ आप ही के ऊपर थीं और आप विभिन्न रूपों में उनको पूरा करते थे। 25 वर्ष इसी तरह चुपचाप आपने सत्य-धर्म की सेवा की।

ज़ाहिरी ख़िलाफ़त

35 हि० में मुस्लिम जनता ने आपके सामने ख़लीफ़ा का पद उपस्थित किया। आप इस प्रकार इस पद

को अस्वीकार कर रहे थे मगर मुसलमानों से शपथ लेने के बाद कि जैसा आप कहेंगे वैसा ही हम सब करेंगे आपने इस पद को स्वीकार किया। लेकिन विरोधियों ने आपको चौन से न रहने दिया। जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान की लड़ाईयाँ हुईं और आपको बहुत दुख हुआ। फिर भी आप ने इस थोड़ी अवधि में मुसलमानों में इस्लामी समानता, भाईचारा, सादगी, न्याय और नियम का सच्चा उदाहरण उपस्थित किया और रसूल के ज़माने की याद दिला दी।

देहान्त

अफ़सोस! कि केवल पाँच वर्ष शासन करने के बाद 19 रमज़ान सन् 40 हि० को अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम मुरादी, एक ख़ारिजी ने मस्जिदे कूफ़ा में आपके सर पर तलवार लगाई। दो दिन इसी ज़ख़्म की तकलीफ़ में व्यतीत कर के 21 रमज़ान को 63 वर्ष की आयु में अपने मालिक से जा मिले। नजफ़ में आपका मक़बरा तीर्थस्थान है।

दूसरे इमाम

हसन (अलैहिस्सलाम) नाम, अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली पिता, जनाब सैय्यिदा हज़रत फ़ातिमा ज़हरा माँ और रसूल नाना थे।

जन्म और पोषण

15 रमज़ान 3 हि० को मदीने में आपका जन्म हुआ बाल्यवस्था में अपने नाना रसूलुल्लाह की गोद में पले बढ़े। और उनके देहान्त के बाद अपने पिता, हज़रत अली द्वारा पालन-पोषण पाया।

इमामत व ख़िलाफ़त

40 हि० में जब हज़रत अली का देहान्त हुआ तो हज़रत इमाम हसन इमाम हुए और मुस्लिम जनता ने भी आपको ख़लीफ़ा मान लिया। मगर शाम के शासक मुआविया ने आप से लड़ाई करने के लिए चढ़ाई की। हालात ऐसे थे कि भयानक रक्तपात के बाद भी झगड़ा समाप्त होने की कोई आशा न थी। इसलिए आप ने कुछ शर्तों पर मुआविया के साथ सन्धि कर ली और ज़ाहिरी हुकूमत से अलग हो गए मगर अल्लाह की ओर से जो इमामत आपको प्राप्त थी वह लेने देने की वस्तु नहीं है और आप चुपचाप यथासम्भव अपने कर्तव्यों का पालन करते थे।

सन्धि और उसका अन्त

इस सन्धि में सबसे पहली शर्त जो आपने रक्खी थी वह यह थी कि मुआविया को क़ुरआन और रसूल के चरित्र के अनुसरण में शासन करना होगा। मुआविया के इस शर्त को स्वीकार कर लेने के बाद इमाम हसन की सन्धि एक विजयी शान रखती थी और आपकी यह क्रिया सम्पूर्णतः अल्लाह की आज्ञानुसार थी। मगर शाम के शासक ने इस सन्धि की किसी शर्त का पालन नहीं किया।

चरित्र

आपके जीवन में सहनशीलता, बर्दाश्त, सब्र, दान, पुन और बलिदान का हिस्सा बहुत ज़्यादा दिखाई देता है। इनके अलावा तमाम गुणों में आप अपने ख़ानदान के उत्तराधिकारी थे।

मृत्यु

दस वर्ष आपने सब से अलग थलग चुपचाप व्यतीत किए। आपकी यह ख़ामोश ज़िन्दगी भी दुश्मनों को एक आँख न भाई आपको ज़हर दिया गया जिस से 28 सफ़र 50 हि० को 47 वर्ष की आयु में आप ने इस संसार से प्रस्थान किया। मदीने में जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए।

तीसरे इमाम

हुसैन (अलैहिस्सलाम) नाम, हज़रत अली पिता, फ़ातिमा ज़हरा माँ, रसूलुल्लाह नाना और इमाम हसन आपके बड़े भाई थे।

जन्म और पोषण

3 शाबान 4 हि० को मदीने में पैदा हुए और अपने बड़े भाई के साथ छः वर्ष तक रसूलुल्लाह की गोद में पले। इसेके बाद हज़रत अली की छाया में जवान हुए और बाप के बाद दस वर्ष तक बड़े भाई के दाहिने हाथ बने रहे।

इमामत

50 हि० में इमाम हसन की मृत्यु के बाद आप इमाम हुए। चूँकि इमाम हसन सन्धि करके एक रास्ता बना चुके थे इसलिए अल्लाह की आज्ञानुसार आप दस वर्ष तक अपने भाई की तरह चुपचाप जीवन बिताते रहे और प्रतिदिन बिगड़ते हुए हालात को देखते रहे।

यज़ीद की ख़िलाफ़त और बैअत मांगना

शाम के शासक मुआविया से सन्धि में एक बड़ी महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि मुआविया को अपने बाद के लिए किसी को ख़लीफ़ा घोषित करने का अधिकार न

होगा। मुआविया ने सब शर्तों को तोड़ने के बाद इस शर्त को भी तोड़ा और अपने बाद के लिए अपने बेटे यज़ीद की ख़िलाफ़त की घोषणा कर दी। यज़ीद एक बड़ा ही दुष्ट व्यक्ति था और ऐसे काम करता था जिनको सुन कर ही मानवता का सर शर्म से झुक जाता है। इमाम हुसैन ने इनकार कर दिया कि मैं इसकी बैअत नहीं करूँगा अर्थात इसको रसूल का ख़लीफ़ा स्वीकार नहीं करूँगा मुआविया ने इस मामले में आपको ज़्यादा नहीं छेड़ा मगर सन् 60 हि० में मुआविया की मृत्यु हो गई और यज़ीद को ज़िद हो गई कि किसी प्रकार इमाम हुसैन से बैअत ले।

कर्बला में बलिदान

यज़ीद ने मदीने के हाकिम को ख़त लिखा कि हुसैन से बैअत ली जाए। नहीं तो उनका सर काट कर मेरे पास भेजा जाए। इमाम हुसैन को बैअत किसी प्रकार स्वीकार न थी मगर अपने प्राणों की रक्षा भी आवश्यक थी। आपने मदीने को छोड़कर मक्के में पनाह ली मगर आपको यहाँ पर भी पनाह न मिली। कुछ लोग हाजियों के भेस में भेजे गए कि वे आपको जिस तरह भी हो सके गिरफ़्तार कर लें या क़त्ल कर डालें। कूफ़े के लोगों के पत्र आपके पास बहुत से आए हुए थे कि यहाँ आईये और हमको सच्चा रास्ता दिखाइये। आप ने अपने चचा के बेटे मुस्लिम बिन अक़ील को वहाँ का हाल देखने के लिए भेजा भी था। अब आप भी कूफ़े की ओर चल पड़े मगर इतने दिनों में वहाँ इब्ने ज़ियाद का शासन स्थापित हो चुका था और हवा बदल गई थी। आपके दूत हज़रत मुस्लिम शहीद किए गए जिसकी सुनानी आप ने रास्ते ही में सुन ली थी। इब्ने ज़ियाद की फ़ौज हुर्र बिन यज़ीद रियाही की कमानदारी में आपको रोकने के लिए पहुँच गई और आपको घेर कर कर्बला की ज़मीन पर पहुँचाया।

दूसरी मुहर्रम को आप कर्बला पहुँचे और तीसरी मुहर्रम से कूफ़े से लश्कर आने लगा जिसकी संख्या चन्द दिन में कम से कम 30 हज़ार तक पहुँच गई। उमर बिन साद इस सेना का सेनापति था। सातवीं से पानी बन्द कर दिया गया और दसवीं मुहर्रम 61 हि० को आप अपने भाईयों, बेटों, भतीजों और सारे साथियों के साथ दोपहर की लड़ाई के बाद शहीद हुए। आपका सर भाले की नोक पर उठाया गया, ख़ेमों में आग लगा दी गई और आपके साथ जो महिलाएं थीं वे बन्दी बना ली गईं। दुश्मनों ने आपकी लाश को बिना दफ़न किए छोड़ दिया। तीसरे दिन असद गोत्र के लोगों ने आकर दफ़न किया। कर्बला में आपका रौज़ा तीर्थस्थान है।

चौथे इमाम

ज़ैनुल आबिदीन, अली बिन हुसैन (अलैहिस्सलाम)। आप हज़रत इमाम हुसैन के सब से बड़े बेटे थे। आपकी माता, शरहबानो ईरान के सम्राट की बेटी थीं। 15 जमादिस्सानी, 37 हि० को आपका जन्म हुआ। जब आपकी आयु केवल 2 वर्ष की थी तो आपके दादा हज़रत अली ने इस संसार को त्याग दिया। आप अपने चचा हज़रत हसन और पिता इमाम हुसैन की छाया में पले बढ़े।

सन् 61 हि० में हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के समय आप इतने बीमार थे कि उठना बैठना दूभर था। इस लिए जिहाद करने का हुक्म आपके ऊपर नहीं था। आप बिस्तर पर बेहोशी की हालत में रहे और घर के सब मर्द शहीद हो गए। इमाम हुसैन की शहादत के बाद आप अपने घर की महिलाओं के साथ क़ैद हुए और नगर-नगर फ़िराए जाने के बाद शाम (सीरिया) के क़ैदख़ाने से छूटकर मदीने गए जहाँ जीवन भर रहे। इसके बाद जब तक जिए, बाप को रोने को छोड़कर तपस्या के अलावा आपका कोई और काम न रह गया था।

आपकी तपस्या मशहूर है। बहुत नमाज़ पढ़ने के कारण आपका नाम ही सय्यदुस्साजिदीन (सजदा करने वालों के सरदार) हो गया। इसी के साथ शरीअत (धर्मशास्त्र) और रसूल के घराने की विद्याओं का शिक्षण चुपचाप करते रहे। 25 मुहर्रम, 95 हि० को 57 वर्ष की आयु में वलीद बिन अब्दुल मलिक के दिलाए हुए ज़हर से प्राण त्यागे और अपने चचा हज़रत इमाम हसन (उन पर सलाम हो) के पास जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए।

पाँचवे इमाम

मुहम्मद बाक़िर (अलैहिस्सलाम) नाम, इमाम ज़ैनुलआबिदीन के सुपुत्र थे। आपकी माता इमाम हसन की पुत्री थीं जिनका नाम फ़ातिमा था। पहली रजब, 57 हि० को पैदा हुए, साढ़े तीन वर्ष की आयु में कर्बला में उपस्थित थे और घराने की महिलाओं के साथ क़ैद की कठिनाइयाँ सहीं। उसके बाद अपने पिता की छाया में पले बढ़े।

आपको रसूलुल्लाह के घराने की विद्याओं के

प्रसार का बहुत अवकाश मिला और आप से बहुत अधिक संख्या में लोगों ने लाभ उठाया। आप के एक चेले, जाबिर बिन यजदि जाफ़ी ने सत्तर हज़ार हदीसें आप से याद कीं और इसी प्रकार अबान बिन तग़्लिब, अबू हमज़ा सुमाली, जरारा बिन आयन, मुहम्मद बिन मुस्लिम, अबूबसीर वग़ैरा बड़े-बड़े ज्ञानी थे जो आप से पढ़-पढ़ कर प्रसिद्ध हुए।

7 ज़िलहिज्जा, 114 हि० को 57 वर्ष की आयु में हिशाम बिन अब्दुल मलिक की तरफ़ से दिये गये ज़हर से आप ने प्राण त्यागे। जन्नतुल बक़ी में अपने पिता के पास दफ़न हुए।

छटे इमाम

जाफ़र सादिक़ (अलैहिस्सलाम), इमाम मुहम्मद बाक़िर (अलैहिस्सलाम) के सुपुत्र थे। 17 रबीउल अव्वल को सन् 73 हिजरी में पैदा हुए। अपने पिता के बाद अहलेबैत (रसूल के घराने) की विद्याओं की नदियाँ बहा दीं। आपके चेलों की संख्या चार हज़ार से अधिक थी। इस्लामी देशों के लोग दूर-दूर से विद्या प्राप्त करने आपके पास आते थे जिनमें अपने पराए का कोई अन्तर न था।

15 शव्वाल 147 हिजरी को 65 वर्ष की आयु में मनसूर दवानेक़ी की ओर से दिलवाए गए ज़हर से शहीद हुए और जन्नतुल बक़ी में अपने बुज़ुर्गों के पास दफ़न हुए।

सातवें इमाम

मूसा काज़िम (उन पर सलाम हो) इमाम जाफ़र सादिक़ के सुपुत्र थे। 7 सफ़र 127 हि० को पैदा हुए और अपने पिता के बाद इमामत के पद को शोभा दी। तपस्या, विद्या, ज्ञान, दान-पुन, हर गुण में अपने बाप-दादा की मूरत थे और अपने ज़माने में सब से अधिक गुणवान थे। धर्म की शिक्षा देने में बराबर लगे रहे।

हारून रशीद ने आपको क़ैद किया और आपके जीवन के आख़िरी चन्द साल तनहाई की क़ैद में व्यतीत हुए। अन्त में क़ैदख़ाने ही में 55 वर्ष की आयु में 25वीं रजब, 183 हि० को हारून रशीद के ज़हर से शहीद हुए और बग़दाद के पास उस जगह पर जो आप ही के नाम पर काज़्मैन कहलाती है, दफ़न हुए।

आठवें इमाम

अली रज़ा (अलैहिस्सलाम) इमाम मूसा काज़िम के सुपुत्र थे। 11 ज़ीक़ादा 147 हि० को पैदा हुए। अपने पिता के बाद इमाम हुए। आपके ज्ञान, पवित्र नियम, तपस्या और समस्त गुणों के कारण सारे मुसलमान आप का बहुत आदर करते थे।

मामून रशीद बादशाह को आपके इस बढ़ते हुए प्रभाव से खटका पैदा हुआ और उसने अपने ख़याल में आप को अपने क़ाबू में करने के लिए आपको उत्तराधिकारी घोषित किया जाना स्वीकार करने पर मजबूर किया। आप बहुत इनकार करते रहे लेकिन मामून हिंसा पर उतर आया। मजबूर होकर आपने स्वीकार किया। मगर मामून का ख़याल ग़लत सिद्ध हुआ और इसके बाद भी आप ने अपने ख़ानदान की सादी ज़िन्दगी और धर्म की असली शिक्षा देने को नहीं छोड़ा। इसी लिए मामून को आपका जीवित रहना खल रहा था और आख़िर उसने आपको ज़हर दे दिया जिस से 17 सफ़र 203 हि० को आपकी मृत्यु हुई। आप ईरान के नगर मशहद में दफ़न हैं।

नवें इमाम

मुहम्मद तक़ी (अलैहिस्सलाम) इमाम रज़ा के सुपुत्र थे। 10 रजब 165 हि० को पैदा हुए। अपने पिता की मृत्यु के समय आप अपने आठवें वर्ष में थे मगर अल्लाह की दी हुई शिक्षा का यह प्रदर्शन था कि उसी समय आपकी विद्या और ज्ञान का लोहा सब मान गए। उसी आयु में बग़दाद के बड़े-बड़े ज्ञानियों और विद्वानों से बहस की और मामून ने अपनी बेटी उम्मुल फ़ज़्ल का विवाह आपके साथ कर दिया।

यह इसलिए किया गया था कि शायद इसी प्रकार इमाम मुहम्मद तक़ी सच्चे इस्लाम के प्रचार में कमी कर दें लेकिन यह तरकीब असफ़ल हुई। आख़िर में मोतसिम बिल्लाह अब्बासी सम्राट की ओर से आप को ज़हर दिया गया और केवल 25 वर्ष की आयु में 28 ज़ीक़ादा 220 हि० को अपने प्राण त्यागे।

दसवें इमाम

अली नक़ी (अलैहिस्सलाम) इमाम मुहम्मद तक़ी के सुपुत्र थे। 5 रजब 214 हि० को पैदा हुए और अपने पिता के बाद इमामत का पद संभाला और सच्चे मुसलमानों को शिक्षा देने लगे।

आख़िर मुतवक्किल अब्बासी ने आपको मदीने में रहने न दिया और 243 हि० में अपनी राजधानी सामर्रा में बुलाकर नज़रबन्द कर दिया। 11 वर्ष आप ने

नज़रबन्दी में बिताए और 3 रजब 254 हि० को 40 वर्ष की आयु में मोतज़ बिल्लाह के ज़हर से शहीद हुए।

ग्यारहवें इमाम

हसन असकरी (अलैहिस्सलाम) इमाम अली नक़ी (उन पर सलाम) के सुपुत्र थे। 10 रबीउस्सानी, 232 हि० को जन्म लिया और 11 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ सामर्रा में आकर नज़रबन्दी की हालत में रहना आरम्भ किया। अपने पिता के बाद इमाम हुए और चुपचाप तपस्या और धर्म शिक्षण में समय बिताते रहे। आख़िर आपको मोतमद बिल्लाह अब्बासी ने ज़हर दिलवाया और 7 रबीउल अव्वल 260 हि० को 27 वर्ष की आयु में संसार से प्रस्थान किया।

बारहवें इमाम

हज़रत इमाम महदी (उन पर सलाम हो और उनको अल्लाह शीघ्र प्रकट करे) इमाम हसन असकरी के सुपुत्र हैं। आप हज़रत हुज्जत (अल्लाह की निशानी), साहिबुल-अम्र (प्रशासन के उत्तरदायी), इमाम मुन्तज़र (प्रतीक्षित इमाम), महदी मौऊद (सच्चे रास्ते वाले जिनके आने का वादा किया गया है) और क़ायमे-आले मुहम्मद (रसूलुल्लाह की संतानों में से (शान्ति) स्थापित करने वाले), आदि पदवियों द्वारा याद किए जाते हैं। आपका असली नाम वही है जो रसूलुल्लाह का है (अर्थात मुहम्मद), मगर आप के आदर (जो आपके इमामे वक़्त अर्थात इस समय के इमाम होने और आपके आने वाली ज़िम्मेदारियों के अनुसार है) के कारण आपका नाम नहीं लिया जाता और इन्हीं पदवियों से आप याद किये जाते हैं।

आप 15 शाबान 256 हि० को सामर्रा में पैदा हुए। अल्लाह की मस्लहत और इच्छा यही थी कि आपको सारे संसार की आँखों से छिपा हुआ रक्खा जाए। आपके पिता के समय में बहुत से ख़ास-ख़ास लोगों ने आपको देखा भी था। हदीसों में आपके जन्म की भविष्यवाणियाँ बराबर होती रहती थीं इसलिए बादशाह की ओर से आपका वद्य करने का हर प्रयत्न किया जाता था मगर अल्लाह को उनकी रक्षा आख़िर ज़माने तक करनी थी। आपके पिता के बाद बहुत कुछ आपको खोजा गया मगर सारी कोशिश असफ़ल हुई। और आपने इमाम के कार्य को करना शुरु कर दिया। 327 हि० तक आपकी ओर से एक विशेष नाएब (अपेक्षी) नियुक्त रहता था जो धर्म-प्रचार करता था, प्रश्नों के उत्तरों पर आपके हस्ताक्षर कराता था और शीओं की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता था। इस सारे समय को ग़ैबत-सुग़रा (छिपे रहने की छोटी अवधि) कहा जाता है। इसके बाद से अल्लाह की इच्छा यही हुई कि कोई नाएब भी न रहे। यह ग़ैबते-कुबरा (छिपे रहने की बड़ी अवधि) है। जब अल्लाह की मस्लहत होगी पर्दा हटेगा और इमाम प्रकट होंगे।

क़यामत

इंसान के लिए इस दुनिया के जीवन के बाद एक और ज़िन्दगी है जिसमें इस जीवन में किये हुए अच्छे और बुरे कर्मों का अच्छा और बुरा बदला मिलेगा। इसी को आख़िरत, हश्र, क़यामत या मआद कहते हैं जो इस्लामी सिद्धान्तों में एक बड़ा महत्व रखता है।

दण्ड या पुरस्कार की ज़रूरत

जब विश्व करतार की क्रियाओं को हम आदर्श, ज्ञान और शक्ति से सम्पूर्ण मान चुके और यह भी मान चुके कि उसकी ओर से हमको उचित मार्ग भी दिखाया जा चुका तो अवश्य मानना पड़ेगा कि उसकी आज्ञाओं का पालन करने वालों और उनके विरोध करने वालों के परिणाम में कोई अन्तर हो, एक को पुरस्कार और दूसरे को दण्ड मिले।

पुरस्कार-दण्ड के लिए दूसरा जीवन

देखा गया है कि कभी-कभी नेक लोगों का सारा जीवन तकलीफ़ में कट जाता है और बुरे लोगों का आराम में। इसी से ये समझना पड़ता है कि पुरस्कार और दण्ड के लिए यह सांसारिक जीवन नहीं है वरन् इस के लिए एक दूसरा जीवन है जो इस जीवन के बाद आएगा। इसी को क़ुरआन में ''आख़िरत'' कहा गया है।

दूसरा जीवन कैसा होगा?

'मनुष्य' केवल द्रव्यों के मिलने से नही बना है कि शरीर के बनने के पहले वह न रहा हो और शरीर के अन्त के साथ उसका का भी अन्त हो जाए वरन् शरीर के अतिरिक्त आत्मा (रूह) भी होती है। रूह शरीर से अलग एक चीज़ है। शरीर के संग्रहण के बाद रूह का उस से सम्बन्ध स्थापित हो जाने का नाम जीवित रहना है और उस सम्बन्ध के टूट जाने को मृत्यु कहते हैं और मृत्यु या देहान्त के बाद भी रूह बाक़ी रहती है और जब अल्लाह चाहेगा पुनः उन को एकत्रित कर देगा। यही उस

व्यक्ति का दूसरा जीवन होगा जिसे मआद (पलटना) कहते हैं।

बरज़ख़

मरने के बाद से इस दूसरे जीवन तक के बीच की अवधि को बरज़ख़ कहते हैं। अच्छे और बुरे कर्मों के फल के रूप में इंसान की रूह को आराम या तकलीफ़ इस अवधि में होती है। अब अगर उस के बुरे कर्म अधिक दण्ड के योग्य नहीं हैं तो अधिकतर उसकी सज़ा इतने ही में ख़त्म हो जाती है और उसके कर्म बहुत बुरे हैं तो उसको सज़ा का अन्तिम हुकुम आख़िरत में सुनाया जाएगा।

हिसाब और मीज़ान (तुला)

दुनिया में अधिक्तर इंसान की आँखों पर पर्दा पड़ा रहता है और वह अपनी बुराईयों को नहीं देख पाता और कभी-कभी वह अपने आपको अच्छा समझने लगता है। कभी-कभी दिखलावा और बनावट उसकी तबीअत में इस बुरी तरह से रच जाता है कि वह ख़ुद उनकी ओर ध्यान ही नहीं दे सकता। आख़िरत में इंसान की अच्छाई और बुराई का इस प्रकार स्पष्ट रूप से उसके सामने आ जाना कि स्वयं उसको उनका पूरा-पूरा अनुभव हो जाए "हिसाब" है। इसी को मीज़ान (तुला) कहा गया है।

दण्ड या पुरस्कार देने के लिए पहले हिसाब ज़रूरी है।

जन्नत व जहन्नुम (स्वर्ग और नर्क)

इस्लामी विश्वास के अनुसार जन्नत और जहन्नुम दशाएं नहीं हैं वरन् यहूदी और ईसाई धर्म के समान इस्लाम भी यह बताता है कि जन्नत और जहन्नुम (जिनको बहिश्त और दोज़ख़ भी कहते हैं) दो जगहें हैं जो अल्लाह ने पहले ही पैदा कर दी हैं। जन्नत अच्छे लोगों के लिए और जहन्नुम बुरे लोगों के लिए है।

एक तरफ़ इस्लाम के धर्मात्मा यह कहते दिखाई देते हैं कि "हे अल्लाह, मैंने तेरी आज्ञा का पालन तेरी जन्नत की लालच या जहन्नुम के डर से नहीं किया वरन् इसलिए कि तुझे इस योग्य समझा कि तेरी आज्ञा का पालन और तेरी पूजा करना चाहिए।" (हज़रत अली)

और कभी यह बताया कि "कुछ लोग अल्लाह का आज्ञापालन जन्नत की लालच में करते हैं। यह मज़दूरों का सा आज्ञापालन है। कुछ लोग जहन्नम के डर से करते हैं। यह दास और ग़ुलाम का सा आज्ञापालन है। और कुछ लोग ऐसे हैं जो केवल उसकी प्रसन्नता का ध्यान करके उसका आज्ञापालन करते हैं। यह आज़ाद लोगों का आज्ञापालन है"। (इमाम जाफ़र सादिक़)

परन्तु इस्लाम एक प्रयोगशील धर्म है। इसलिए उस में हर प्रकार के लोगों के विचारास्तर के अनुसार बातें हैं और इसी लिए बार-बार जन्नत और जहन्नुम का भी उल्लेख किया गया है ताकि जो लोग इतने ऊँचे नहीं जा सकते उनके लिए भी नेकी करने के कारण और बदी करने में रुकावट डालने के साधन हो सकें।

और इसी लिए जन्नत के उल्लेख के साथ वहाँ की शराब-तहूर (पवित्र सुधा) और हूरों (अपसराओं) का भी उल्लेख किया गया है। जिस प्रकार की ख़्वाहिशों से दुनिया में ख़राबियाँ पैदा होती हैं उन ही को उन ख़राबियों के दूर करने का यन्त्र बनाया गया है।

आवागमन

इस्लाम ने पुरस्कार और दण्ड को जिस प्रकार समझाया है उसके यही वह उद्देश्य हैं जो कुछ धर्मों के अनुसार बताए गए आवागमन से नहीं प्राप्त हो सकते। इसलिए कि जब तक यह न मालूम हो कि हमको किस बात के पुरस्कार या दण्ड के रूप में यह जन्म मिला है, दण्ड या पुरस्कार का हमारे ऊपर क्या प्रभाव हो सकता है? फिर ऐसा भी कहा जाता है कि कभी-कभी दूसरा जन्म किसी जानवर की शक्ल में भी हो सकता है और तब उसको तो और भी कुछ नहीं प्रतीत हो सकता। इसके अतिरिक्त फिर यदि हर वर्तमान जन्म किसी बीते जन्म के कर्मों का फल है और उसकी तमाम विशेषताएं और चिन्ह रखने में हम विवश हैं तो फिर इस जन्म पर कोई दूसरा दण्ड या पुरस्कार मिलना व्यर्थ सी बात है।

मस्ख़ (रूप परिवर्तन) और आवागमन

सज़ा के तौर पर अनेक जातियों का रूप परिवर्तन होना क़ुरआन से मालूम होता है लेकिन उसका आवागमन से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मस्ख़ के पहले आदमी मरता नहीं है बल्कि उसी जन्म में उस रूह के उस शरीर में रहते हुए उस शरीर की शक्ल किसी जानवर की सी हो जाती है जो इंसान के लिए एक अपमान की बात है इसलिए सज़ा की हैसियत रखती है और दूसरों के लिए चेतावनी है। मगर आवागमन के यह अर्थ हैं कि आदमी मर गया अर्थात

रूह उसके शरीर से निकल गई और फिर किसी आदमी या जानवर के शरीर में प्रवेश करके माँ के पेट से पैदा हुई। यह मस्ख़ से बिल्कुल विभिन्न है।

आवागमन-सिद्धान्त की मौलिक त्रुटियाँ

आवागमन में हर जन्म पिछले जन्म के कर्मों का फल होता है। यदि पिछले जन्म के कर्मों के दण्ड के रूप में रूह किसी जानवर या पेड़ पौधे में डाल दी गई तो अब नये कर्मों का कोई सवाल नहीं पैदा होता। इसलिए अब इसके बाद किसी दूसरे जन्म की आवश्यकता बाक़ी नहीं रहती।

अगर यह मान भी लिया जाए कि वह रूह पाक होकर फिर आदमी का जन्म लेती है तो फिर उसको जब पिछले जन्म में सब दण्ड और पुरस्कार मिल चुके हैं तो उसके इस नए जन्म में उसको कोई कष्ट या आराम-ख़ुशी न होना चाहिए लेकिन ऐसा होना हर मनुष्य के लिए आवश्यक है।

इसलिए मानना पड़ेगा कि कुछ लोग जो जानवर-आदि के जन्म लेकर सज़ा भोग चुके हैं अब फिर इंसान का जन्म न लेंगे। इस तरह से हमेशा इंसानों की संख्या घटती रहनी चाहिए मगर हम देखते हैं कि वह हमेशा बढ़ती रहती है।

वह बच्चे जो पैदा होते ही मर जाते हैं और उन्हें दुनिया में न चैन नसीब होता है न तकलीफ़ ही होती है तो ऐसा किस जन्म का फल होता है? और जब अब उन्होंने कुछ किया ही नहीं तो उनका अगला जन्म क्या हो सकता है?

जानवरों के रूप में जन्म लेना ही पिछले कर्मों की सज़ा है तो फिर जानवरों को जो तकलीफ़ होती है वह किस पाप की सज़ा है?

किसी जानवर को नहीं देखा जाता कि वह जिस जानवर के रूप में है उसकी प्रकृति के विरूद्ध कुछ करता हो और जब जानवरों में बहुत से ऐसे हैं जो किसी पाप के दण्ड में जानवर बनाए गए हैं तो इस दण्ड का उनके ऊपर असर ही क्या हो सकता है कि अगले जन्म में वे उसका ख़याल रक्खें? दूसरे जब हम जानते हैं कि हमको अपने बुरे कर्मों के दण्ड में जिस जानवर का जन्म मिलेगा उसी के अनुसार हमारी तबीअत भी होगी और हम को किसी तकलीफ़ का अनुभव इस बात में न होगा तो हम ऐसे आने वाले दण्ड से डरने ही क्यों लगे?

अपने पिछले जन्म की बातें किसको याद आती हैं कि वह उस जन्म में मिले हुए दण्ड को याद करके बुरे कामों से बचे या पुरस्कार को याद करके अच्छे काम करे?

जिस जन्म में हम हैं अगर वह किसी जानवर का है तो हम को दण्ड का अनुभव ही न होगा तो ऐसा दण्ड, दण्ड ही न हुआ।

क़यामत का दुनिया के अन्त में होना

बहुत से ऐसे काम हैं जिनके असर का सिलसिला हमेशा या बहुत दिनों तक चलता रहता है जैसे किसी बीमारी की दवा ईजाद करना या किसी हानिकारक आदत-फैशन (जैसे किसी नशे) का पैदा करना और सिखा देना। तो जब तक उस काम के लाभ और हानि जारी रहेंगे उस समय तक उस पर पुरस्कार या दण्ड कितना हो यह निश्चित नहीं हो सकता। इसलिए आवश्यक है कि इस दुनिया के ख़त्म होने के बाद जब कर्मों का संसार समाप्त हो जाए दूसरी दुनिया पुरस्कार और दण्ड के लिए हो।

दुनिया में दण्ड व पुरस्कार

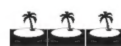
इस्लाम इसको भी मानता है कि कभी-कभी बाज़ कामों का अच्छा या बुरा बदला इंसान को इसी जीवन ही में भी मिल जाता है मगर इसका मतलब यही है कि लोग अपनी आँखों से देखकर भी अच्छा काम करें और बुरे कामों से बचें। और इस से क़यामत की आवश्यकता और महत्व पर कोई असर नहीं पड़ता जैसा ऊपर दिखाया गया है।

ग़ौर से देखा जाए तो मालूम होगा कि बहुत से दण्ड और पुरस्कार प्राकृतिक नियमों (Laws of Nature) के अन्तर्गत ही होते हैं। मिसाल के तौर पर, जो आदमी बहुत शराब पियेगा उसका स्वास्थ आप ही बिगड़ेगा। इनके अतिरिक्त जो दण्ड या पुरस्कार है उनके लिए क़यामत है।

टिप्पड़ियाँ

1- जहन्नुमः शुद्ध अरबी रूप, 'जहन्न्म'

2- हूरः पवित्र सुन्दर कुमारियाँ जो स्वर्ग में हैं जो इस दुनिया के जैसे शरीर नहीं रखतीं। वे कोई नर्तकियाँ भी नहीं है।



उहद के शहीद

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

2 हिजरी की मशहूर जंग ''बद्र'' के ज़ख़्म खाए हुए मुश्रिकों ने मुसलमानों पर चढ़ाई का फिर इरादा किया और चौथी शव्वाल 3 हिजरी बुद्ध के रोज़ अबुसुफ़यान की कमाण्डरी में एक लश्कर मदीने के बिल्कुल क़रीब आकर ठहर गया जिसके साथ हर तरह का जंगी सामान और उसमें तीन हज़ार हथियारबन्द सिपाही और बड़े तर्जुबे वाले लोग मौजूद थे। सरवरे काएनात[स०] इस ज़बरदस्त लश्कर का मुक़ाबला करने के लिए एक हज़ार मुसलमानों के साथ मदीने से बाहर तशरीफ़ लाए मगर अब्दुल्लाह बिन उबई अपने तीन सौ साथियों को ये कहकर वापस ले गया कि हम मदीने के बाहर जंग नहीं करेंगे बल्कि अगर दुश्मन ने शहर पर हमला कर दिया तो उस वक़्त लड़ेंगे। इस मुनाफ़िक़त की चाल के बाद इस्लामी फ़ौज में सिर्फ़ सात सौ सिपाही रह गए थे। ''उहद'' एक मशहूर पहाड़ का नाम है जो मदीना मुनव्वरा से उत्तर की तरफ़ तक़रीबन दो मील पर है। इसी पहाड़ के सामने ये ख़ूनभरी लड़ाई हुई थी। मुसलमानों ने अपने पीछे की तरफ़ पहाड़ को लेकर दुश्मनों का मुक़ाबला किया। इस्लामी फ़ौज के पीछे की तरफ़ एक घाटी थी जिस से दुश्मनों के हमले का हर वक़्त ख़तरा था इसलिए रसूल[स०] ने उस घाटी की हिफ़ाज़त के लिए पचास तीर चलाने वालों को लगा दिया था ताकि पीछे की तरफ़ से काफ़िर हमला न कर सकें।

लड़ाई शुरु हुई। पहली बार मुसलमानों को ज़बरदस्त जीत मिली और काफ़िरों की फ़ौज ने मैदान छोड़ दिया। और सारे लोग काफ़िरों के छोड़े हुए माले ग़नमीत को लूटने में लग गए। यह देख कर तीर चलाने वाले दस्ते ने भी अपनी जगह छोड़ दी और अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके कुछ साथियों के अलावा सब लूट में शामिल हो गए। काफ़िरों की फ़ौज ने जब ये हालत देखी तो उसने पीछे से मुसलमानों पर हमला कर दिया। इस अचानक हमले का ये असर हुआ कि पूरी इस्लामी फ़ौज में अफ़रातफ़री फैल गई। अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके तीर चलाने वाले साथी भी सब शहीद हो गए। मुसलमानों के सत्तर सिपाही इस जंग में काम आ गए। मगर ग़रीबी का ये हाल था कि लाशों को छुपाने के लिए कपड़ा भी मौजूद न था। हज़रत मुस्अब बिन उमैर जो बहुत ही ख़ूबसूरत और रसूल[स०] की शक्ल व सूरत में कुछ मिलते थे, उनकी लाश को जब चादर से छुपाया जाने लगा तो कभी सर खुल जाता और कभी पैर फिर रसूल[स०] के हुक्म से उनके सर को बन्द कर दिया गया और पैरों पर घास डाल दी गई।

उहद के मैदान में जो मुहाजिर और अंसार शहीद हुए थे उनमें से कुछ ये हैं:- बनी हाशिम में: हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब[अ०] जो रसूल[स०] के चचा भी थे और दूध शरीक भाई भी। आपकी बहादरी अरबों में मिसाल के तौर पर पेश की जाती थी। उहद की जंग में आपने बहादरी के वह जौहर दिखाए जो तारीख़ में हमेशा यादगार रहेंगे। हज़रत हमज़ा[अ०] को धोके से जुबैर बिन मुतइम के गुलाम ने शहीद किया जिसका नाम ''वह्शी'' था। और आपकी लाश को हिन्द और दूसरी काफ़िर औरतों और मर्दों ने इस तरह ''मुसला'' किया जिसकी मिसाल ज़ुल्म और ज़्यादती की तारीख़ में नहीं मिलती। इसी जंग में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश जो रसूलुल्लाह[स०] के साले और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के नवासे थे,

शेष........ पेज 14 पर

इस्लाम और इंसानी हुक़ूक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
अनुवादः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

(12)

पिछले मज़मून में ज़ुल्म के मौज़ू पर कुछ तफ़सील से बातचीत हुई। इस्लाम में ज़ुल्म और अद्ल के बारे में इतनी ज़्यादा हदीसें मौजूद हैं कि उनके बयान के लिए एक अलग किताब की ज़रूरत है। इस्लामी क़ानूनों का बनाने वाला अल्लाह है जो सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है और उसे पहुँचाने वाले मुहम्मद मुस्तफ़ा सल-लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हैं जो आलमीन के लिए रहमत हैं, इसलिए इस में अद्ल ही अद्ल है, ज़ुल्म का शक भी नहीं। अख़लाक़ के जानकारों ने लिखा है कि ज़ुल्म की बुनियाद और वजहें कुछ चीज़ें बनती हैं **(1)जेहालतः-** जेहालत और नादानी ज़ुल्म की बुनियाद बन जाती है जैसे कि काले रंग की क़ौमों पर ज़ुल्म होता रहा है। इस जाहिलाना ख़याल के साथ कि गोरे लोग उनसे बेहतर हैं और काले उनकी सेवा के लिए पैदा किये गए हैं या जिस तरह हिन्दुस्तान में हज़ारों साल दलितों पर इस बेवक़ूफ़ी वाले ख़याल के साथ ज़ुल्म होते रहे कि वह भगवान के पैरों से पैदा किये गए हैं, इसलिए उनका काम सिर्फ़ सेवा करना है, जबकि इस ख़याल को पेश करने वाले इस हक़ीक़त को भूल गए कि सर की बड़ाई पैरों ही की वजह से है, अगर पैर सहारा न दें तो सर ज़मीन पर नज़र आएगा। ज़ाहिर है कि अल्लाह के यहाँ जेहालत का गुज़र नहीं। जहाँ इल्म ऐन ज़ात हो वहाँ जेहालत की जगह कहाँ? इसलिए यह ज़ुल्म की बुनियाद उसके यहाँ नहीं पाई जाती। **(2) डरः-** ज़ुल्म करने की एक वजह डर भी है। एक मुल्क का ज़िम्मेदार दूसरे मुल्क पर सिर्फ़ इस डर से हमला कर देता है कि कहीं वह हमले में पहल करके उसे तबाह न कर दे और इस तरह से वह ज़ुल्म करने वाला बन जाता है। या जिस तरह से वक़्त के शहंशाह और डिक्टेटर, जमहूरियत पसन्द करने वालों और आज़ादी के चाहने वालों पर इस तरह ज़ुल्म और सितम के पहाड़ तोड़ते हैं कि कहीं ये आज़ादी का आन्दोलन ज़ोर न पकड़ जाए और उनका सिंघासन पलट न जाए, लेकिन अल्लाह तआला को अपनी हुकूमत के लिए किसी से ख़तरा नहीं जो वह (अल्लाह की पनाह) ऐसे किसी क़दम को उठाने वाला हो। **(3)ज़रूरतः-** कभी-कभी इंसान को उसकी ज़रूरत ज़ुल्म पर मजबूर कर देती है। अगर अपने आयोग्य होने पर वह किसी चीज़ से महरूम है तो वह चाहता है कि दूसरे से छीन कर हासिल कर लें और इस तरह से वह ज़ुल्म और सितम करता है। अल्लाह तआला के यहाँ ज़ुल्म की ये बुनियाद भी नहीं क्योंकि हर एक उसका मोहताज है और वह हर एक से बेनियाज़ है। **(4)लालच और ख़ुदग़र्ज़ीः-** इन दो नफ़्सानी बीमारियों की वजह से इंसान ज़ुल्म करता है। चाहता है दूसरों का हक़ छीन ले। ज़्यादा से ज़्यादा का मालिक बन जाए। अल्लाह तआला की ज़ात में ज़ुल्म की ये बुनियाद भी नहीं पाई जाती, क्योंकि काएनात की हर चीज़ का वह ख़ुद मालिक और मुख़्तार है। और ज़र्रा-ज़र्रा अपने होने में उसका मोहताज है। **(5)नफ़्स की बुराईः-** कुछ लोगों को दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाकर मज़ा आता है। जिसे Sadism कहा जाता है, लेकिन ऐसा सिर्फ़ दूसरों को तकलीफ़ देकर तो मज़ा लेता है, मगर ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलती कि ख़ुद अपनी औलाद को तकलीफ़ पहुँचाकर भी वह ख़ुशी महसूस कर ले। अल्लाह की

मुहब्बत अपनी मख़लूक़ से एक माँ की मुहब्बत से सत्तर गुना से भी ज़्यादा है। इसलिए उसकी पाक ज़ात में जुल्म की ये वजह भी नहीं पाई जाती। जब ये साबित हुआ कि सारी जुल्म की वजहों से उसकी ज़ात पाक और साफ़ है तो अब उसके बनाए हुए क़ानून में जुल्म का गुज़र नहीं हो सकता।

हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] ने बहुत ही क़ीमती जुमला इरशाद फ़रमायाः ''कमज़ोर इंसान जुल्म का सहारा लेता है'' हमारा ख़याल तो ये है कि जुल्म वह करते हैं जो बहुत ताक़तवर हो जाते हैं, लेकिन इमाम[अ०] ने इसके उलट ख़याल पेश किया है कि जुल्म का सहारा वही लेता है जो खुद मोहताज और कमज़ोर होता है, जब हम ग़ौर करते हैं तो इस इरशाद का मतलब सामने आता है कि सहारा वही लेता है जो कमज़ोर होता है। ताक़तवर को सहारे की ज़रूरत नहीं। जुल्म का सहारा लेना साबित करता है कि ज़ालिम खुद कमज़ोर है और छीनता वही है जो खुद महरूम और मोहताज होता है। इसलिए किसी से छीन लेना ये ज़ाहिर करता है कि अगर मोहताज न होता तो छीनने की ज़रूरत न होती और अल्लाह तआला के लिए कुरआन मजीद में एलान है- ''अल्लाह तआला तमाम आलमों की मख़लूक़ों पर जुल्म का इरादा तक नहीं करता'' (सूरए-आले इमरान, आयत-8)

न सिर्फ़ ये कि अल्लाह जुल्म नहीं करता, बल्कि जुल्म का हक़ीक़ी बदला लेने वाला वही है। सारे मज़लूमों और सताए हुए लोगों को उसने यक़ीन दिलाया है कि ज़ालिम उसके बदले से बच नहीं सकते। रसूल[स०] का इरशाद हैः- ''जिस दिन ज़ालिम से बदला लिया जाएगा, वह दिन उस दिन से कहीं सख़्त होगा कि जब ज़ालिम ने मज़लूम पर जुल्म किया है।'' एक जगह पर इरशादे रिसालत हैः- ''मज़लूम की दुनिया से ज़ालिम इतना नहीं ले पाता जितना मज़लूम ज़ालिम के दीन से ले लेता है।'' जुल्म के मौजू पर बहुत ही अहम इरशाद हैः ''सारी दुनिया ख़त्म हो जाए उसकी अहमियत अल्लाह के यहाँ कम है इस बात से कि बेगुनाह का ख़ून बहे।'' हदीस शरीफ़ में इरशाद हैः- ''अगर किसी ने ज़ालिम का साथ दिया चाहे उसकी दवात में रोशनाई क्यों न भरी हो या उसे कलम क्यों न दिया हो या उसके लिए थैली का मुँह क्यों न बाँधा हो (यानी देखने में बहुत ही मामूली काम क्यों न अंजाम दिये हों) ऐसे मददगार भी अल्लाह के बदले से बच नहीं पाएंगे।'' इन सभी हदीसों से साबित होता है कि कुरआन और इस्लाम की निगाह में मुसलमान सिर्फ़ वही है जो न खुद जुल्म करे न किसी ज़ालिम का साथ दे।

इस्लाम तो रहमत का क़ानून है कि इंसान तो इंसान जानवरों तक पर जुल्म सख़्ती से मना है। आज तहरीकें चलाई जा रही हैं कि जानवरों पर होने वाला जुल्म रोका जाए। एन०जी०ओज़ बन रहे हैं, मगर इस्लाम जानवरों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त में आगे है और उनकी हिमायत में क़ानून बना चुका है। इरशादे रिसालत हैः- ''अगर किसी ने किसी जानवर यहाँ तक कि एक छोटी से चिड़िया पर भी जुल्म किया तो क़यामत के दिन मैं उसके दुश्मन की हैसियत से आऊँगा'' दूसरी हदीस में इरशाद हैः- ''अगर किसी ने बिला वजह एक गौरैय्या को भी मार दिया तो वह नन्हीं चिड़िया हश्र के मैदान में अल्लाह से फ़रियाद करेगी कि फ़लाँ शख़्स ने बिला वजह मेरी जान ली।'' अब दहशतगर्द सोचें कि जब इस्लाम में किसी जानवर को भी बिला वजह मारना सख़्ती से मना है और जुल्म में गिना जाता है तो धमाकों से हज़ारों लाखों बेगुनाहों को मार देना कैसे इस्लाम माना जाएगा? और जब हदीस एलान फ़रमा रही है कि अगर बिला वजह किसी ने एक चिड़िया को भी मार दिया तो रसूल[स०] ऐसे शख़्स के दुश्मन की हैसियत से हश्र के मैदान में तशरीफ़ लाएंगे। इस बात से उस झूठ का पोल खुल जाता है जो भोले-भाले मुसलमान नौजवानों को अमरीका और इस्राईल के ख़रीदे हुए मुल्ला मोलवी समझाते हैं कि अगर किसी मज़ार, मस्जिद, दरगाह, इमाम बारगाह, स्कूल या बाज़ार में अपने को बम से उड़ा लिया तो रसूलुल्लाह[स०] जन्नत में दस्तरख़्वान पर तुम्हारा स्वागत करेंगे।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 6 मई 2011[ई०])

(13)

अब तक की बातचीत का खुलासा ये है कि इस्लामी क़ानून रहमत की बुनियाद हैं और इसकी हर शाखा खुदाई रहम को दिखाने वाली है। किसी मुसलमान को किसी भी बहाने से न तो जुल्म करने की इजाज़त है

और न किसी ज़ालिम का साथ देने की। यहाँ तक कि किसी काफ़िर व ग़ैर मुस्लिम पर भी ज़्यादती करने का इस्लाम रवादार नहीं है। बल्कि मामला इस से भी बड़ा है और क़ुरआन मजीद में मुसलमान की तारीफ़ (Defination) इस तरह की गई है, मतलबः- "तुम कितनी बेहतरीन उम्मत हो" (सूरए आले इमरान, आयत-110) आयत में न मुसलमान का लफ़्ज़ है और न मोमिन बल्कि 'अन्नास' है, यानी पूरी इन्सानियत जिसमें काफ़िर और मुश्रिक सब दाख़िल हैं। क़ुरआन की आयत के हिसाब से एक मुसलमान उस वक़्त बेहतरीन उम्मत कहलाने के लायक़ बन सकेगा, जब वह इंसानियत की भलाई के लिए काम कर रहा हो, काश मुसलमान इस आयत के माने समझ सकें। ज़ुल्म करना तो बहुत दूर की बात है एक मुसलमान को न्युट्रल और बेपरवाह रहने की भी इजाज़त नहीं, बल्कि क़ुरआन मजीद की नज़र में मुसलमान सिर्फ़ वह है जो दूसरों के फ़ायदे के लिए काम कर रहा हो और इस फ़ायदा पहुँचाने में उसे मुस्लिम या ग़ैर मुस्लिम का फ़र्क नहीं करना है। आज जो मुसलमान, इस्लाम दुश्मन ताक़तों की साज़िशों का शिकार बन कर अपनी नाजाएज़ हुकूमतों को बचाने के लिए मुसलमानों का बेदर्दी से ख़ून बहा रहे हैं, वह अपने बुरे चेहरे इस आयत के साफ़ सुथरे आईने में देखें और ख़ुद फैसला करें कि वह किस हद तक मुसलमान हैं और ख़ास तौर से वह उलमा और ज़िम्मेदार जो ऐसी ज़ालिम हुकूमतों की हिमायत करते चले आए हैं, वह इस आयत को सामने रखते हुए अपने फ़ैसले पर दोबारा नज़र डालें।

ऊपर दी गई आयत की रौशनी में हुज़ूर सरवरे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] की हदीस शरीफ़ दो तरह से आई है। एक जगह पर इरशाद है, मतलब- 'मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से हर मुसलमान महफ़ूज़ रहे" दूसरी जगह इरशाद है, मतलब- "मुसलमान वह है, जिसके हाथ और ज़बान से सब इंसान महफ़ूज़ रहें" यानी रिसालत की नज़र में मुसलमान सिर्फ़ वही है जिसके हाथ और ज़बान से किसी इंसान को भी नुक़सान न पहुँचे। इसी तरह से एक और इरशादे रिसालत है, मतलब- "मुसलमान वह है जिसकी तरफ़ से उसके पड़ोसी का दिल सुकून में रहे" इस से ज़्यादा क़ीमती और मतलब भरा जुमला दुनिया के किसी भी अख़लाक़ का सबक़ देने वाले की ज़बान से न आज तक निकला है और न निकलेगा। पाक इरशाद में लफ़्ज़ पड़ोसी है जो मुसलमान भी हो सकता है और ग़ैर मुस्लिम भी। ऐसे पड़ोसी को कामिल यक़ीन और सुकून हो कि मेरे बराबर में एक मुसलमान रह रहा है और क्योंकि वह मुसलमान है, इसलिए इस से मुझे कभी नुक़सान नहीं पहुँच सकता। ख़ुद रसूले पाक[स०] क़ुरआनी आयतों और अपने इरशादों की अमली तस्वीर पेश कर रहे हैं। तारीख़ में वाक़िआ लिखा है कि हुज़ूर[स०] तशरीफ़ लिये जा रहे हैं, अस्हाबे केराम का मजमा साथ-साथ है। रसूले ख़ुदा[स०] की नज़र पड़ी कि एक बूढ़ी औरत पानी की एक भारी मश्क (चमड़े का एक बड़ा थैला जो कुछ ज़माने पहले तक पानी भरने के लिए इस्तेमाल होता रहा है) कांधों पर लिये जा रही है रसूलुल्लाह[स०] ने देखा कि बूढ़ी औरत से बोझ उठ नहीं रहा है। आप फ़ौरन आगे बढ़े और उसके कांधों से मश्क उतार कर अपने कांधों पर रख ली। यह नहीं पूछा कि मज़हब क्या है। बूढ़ी औरत से पूछा कि घर का पता बताइये, मैं वहाँ पहुँचा दूँ। सहाब-ए-केराम दौड़ कर आए अल्लाह के रसूल[स०] ये मश्क हमें दे दीजिए, आप तकलीफ़ न उठाइये। रसूलुल्लाह ने इनकार फरमा दिया, तारीख़ गवाह है कि आगे-आगे वह बूढ़ी औरत पीछे-पीछे अल्लाह के रसूल[स०] भारी मश्क उठाए हुए चल रहे थे। घर के दरवाज़े पर पहुँच कर इस औरत ने मश्क लेना चाही तो रसूले अकरम[स०] ने फ़रमाया वह जगह बताईये जहाँ आप मश्क रखती हैं। औरत घर के अंदर ले गई। रसूलुल्लाह[स०] ने मश्क को उसकी जगह रखा, पलट कर जाने लगे तो उस बूढ़ी औरत ने रसूल[स०] को मुख़ातब करके कहा कि ऐ जवान मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है, मगर शुक्रिये के तौर पर तुम्हें एक फ़ायदेमंद मश्वरा देना चाहती हूँ। रसूलुल्लाह[स०] ने अख़लाक़न फ़रमाया ज़रूर दीजिए। कहा देखो हमारे इलाक़े में एक जादूगर आ गया है, जिसका नाम मुहम्मद है (वह अभी तक पहचानती नहीं थी कि मदद करने वाला कौन है) देखो उसका जादू ऐसा है कि जिस पर भी वह जादू कर देता

है वह अपने बाप-दादा का दीन छोड़कर उसका दीवाना हो जाता है, इसलिए उसके धोके में कभी भी न आना। रसूले अकरम ने फ़रमायाः मेरे लिए आपके मश्वरे पर अमल करना मुमकिन नहीं है। बूढ़ी औरत के माथे पर बल पड़े। तुम्हारी भलाई के लिए इतना अच्छा मश्वरा दे रही हूँ और तुम इनकार कर रहे हो। फ़रमाया इस लिए मुमकिन नहीं कि जिस मुहम्मद[स०] से आप दूर हो जाने का मश्वरा दे रही हैं वह मुहम्मद[स०] तो मैं ख़ुद हूँ। ये सुनना था कि वह हैरत में पड़ गई। सकते में आ गई। तुम ही मुहम्मद हो? फ़रमाया, हाँ मैं ही हूँ। अब इस बूढ़ी ख़ातून के जुमले देखिये, कहती है ''मेरे रिश्तेदार देख रहे थे कि मुझ से मश्क नही उठ रही है, मगर कोई आगे न बढ़ा। मेरे क़बीले वाले देख रहे थे मुझे मदद की ज़रूरत है, मगर मदद न की, लेकिन तुम ने न ये पूछा कि मैं कौन हूँ न मेरा मज़हब पूछा, बल्कि फ़ौरन मदद के लिए आ गए। अब मैं समझी कि तुम्हारा जादू क्या है। तुम्हारा जादू तुम्हारा अख़लाक़ है, तुम्हारा जादू तुम्हारा किरदार है।'' इस वाक़िए से जहाँ एक हक़ीक़ी मुसलमान के फ़राएज़ का अंदाज़ा होता है, वहाँ दूसरी तरफ़ इन इस्लाम दुश्मनों के इस प्रोपगण्डे का क़िला धवस्त होता है कि रसूले इस्लाम[स०] के एक हाथ में तलवार थी और एक हाथ में क़ुरआन और उन्होंने इस्लाम तलवार के ज़ोर पर फैलाया।

आज से चौदह सौ साल पहले इस्लाम ने सिर्फ़ इंसान ही नहीं, बल्कि जानवरों के हुक़ूक़ का भी लेहाज़ रखा है। एक मौक़े पर रसूल ने जानवरों के छः हुक़ूक़ बयान फ़रमाए हैं:- (1) जब अपनी मंज़िल पर पहुँचो तो अपनी ग़िज़ा और पानी की फ़िक्र बाद में करो, पहले अपनी सवारी के जानवर को सैर सैराब करो (2) सफ़र के बीच में जहाँ कहीं पानी नज़र आए, वहाँ जानवर को ले जाओ (3) जानवर के चेहरे पर न मारो (4) सवारी के जानवर पर बैठे-बैठे कोई दूसरा काम न करो। सफ़र पूरा होते ही उतर जाओ। जैसे कि ऐसा न हो कि सवारी पर बैठे-बैठे आपस में लम्बी बातचीत शुरु कर दो (5)जानवर पर उसकी ताक़त से ज़्यादा सामान न लादो (6) जानवर की ताक़त से ज़्यादा सफ़र न करो। जानवर के सिलसिले में इतनी छोटी-छोटी बातों का ख़याल इस्लाम ने रखा है, जिनका पुराने ज़माने में सोचना भी मुश्किल था। (बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 20 मई 2011[ई०])

(जारी)

शेष.......... उहद के शहीद

शहीद हुए। बनू अब्दुद्दार की अज़ीम शख़्सियत हज़रत मुस्अब बिन उमैर भी इसी जंग में काम आए जिनकी ख़ूबसूरती का क़ुरैश में जवाब न था और जिन्होंने रसूल[स०] की मुहब्बत में दुनिया का हर आराम छोड़ दिया था। अंसार में से जो लोग शहादत पाए उनमें हज़रत हंज़ला (जिनको फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया) का नाम सब ही जानते हैं। ये ख़िताब उन्हें ख़ुद रसूल[स०] ने दिया था क्योंकि फ़रिश्तों ने उन्हें ग़ुस्ल दिया था।

उहद के शहीदों में अनस[रज़ि०] बिन मालिक के चचा अनस बिन नज़्र भी थे जिनकी लाश में सत्तर घाव के निशान पाए गए। अल्लामा सुहैली ने लिखा है कि क़बीला बनु दिबनार की एक औरत का शौहर, भाई और बाप सब उहद की जंग में शहीद हो गए। और जब लोगों ने उसको उनकी मौत की ख़बर सुनाई तो बजाए उन पर ग़म करने के उसने पूछा कि ख़ुद रसूल[स०] किस हाल में हैं? और फिर दौड़ती हुई आई और जब रसूल[स०] को सही सालिम देखा तो ख़ुश होकर कहने लगीः ''हुज़ूर[स०] सलामत रहें तो फिर हमें किसी मुसीबत की भी कोई परवाह नहीं है।'' लोग चाहते थे कि अपने-अपने रिश्तेदारों की लाशों को मदीने में दफ़्न करें लेकिन रसूल[स०] ने हुक्म दिया कि सबको उहद के मैदान में दफ़्न किया जाए।

रसूल[स०] के चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब[अ०] की क़ब्र उहद पहाड़ के ठीक सामने है। आपकी एक बड़ी ख़ास बात ये थी कि आपकी जनाज़े की नमाज़ में रसूल[स०] ने सत्तर तकबीरें कहीं थीं।

मुख्य समाचार

आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत की तजवीज़ नाकाम बनाने की इस्राईली कोशिश

मिस्र की राजधानी क़ाहिरा में फ़िलिस्तीन की हमास और फ़तह तहरीकों के रहनुमाओं के दरमियान मुज़ाकरात के दूसरे दौर के मौक़े पर सहयूनी अख़बारात ने इस बात की ख़बर दी है कि सहयूनी हुकूमत आने वाले सितम्बर के महीने में संयुक्तराष्ट्र की जनरल असेम्बली में आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत तसलीम किये जाने की तजवीज़ को नाकाम बनाने पर लगी हुई है।

याद रहे कि अमरीका और सहयूनी हुकूमत की मुख़ालिफ़त के बाद भी फ़िलिस्तीनी इन्तिज़ामिया दुनिया के कम से कम एक सौ तीस मुल्कों की हिमायत के साथ आने वाले सितम्बर के महीने में सयुंक्तराष्ट्र की जनरल असेम्बली में बैतुलमुक़द्दस की राजधानी वाली एक आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत तसलीम किये जाने की तजवीज़ पेश करने वाली है। सहयूनी हुकूमत के अख़बारों ने संयुक्तराष्ट्र की जनरल असेम्बली में आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत तसलीम किये जाने की तजवीज़ नाकाम बनाने की सहयूनी हुकूमत की कोशिशों की तसदीक़ करते हुए कहा है कि इस्राईली वज़ारते ख़ारजा ने फ़िलिस्तीनियों की तजवीज़ को नाकाम बनाने के लिए ख़ास मंसूबे तैयार किये हुए हैं। सहयूनी अख़बार मआरियो ने इस सिलसिले में लिखा है कि इस्राईली विदेश मंत्रालय के हुक्काम मुख़तलिफ़ मुल्कों का दौरा करके उन मुल्कों को इस बात पर तैयार करने की कोशिश करेंगे कि वह संयुक्तराष्ट्र के जनरल असेम्बली में आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत की तशकील की तजवीज़ की हिमायत न करें।

इस्राईली अल-यौम अख़बार ने भी ये दावा करते हुए कि आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत के एकतरफ़ा तौर पर तसलीम किये जाने की मुख़ालिफ़त में आए दिन शिद्दत आती जा रही है। बाराक ओबामा की तरफ़ से इस तजवीज़ की मुख़ालिफ़त किये जाने की तरफ़ इशारा किया है।

ओबामा ने पिछले महीने 1967 की सरहदों के साथ आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत की तशकील की हिमायत का एलान किया था लेकिन फिर सहयूनी लाबी के दबाव के बाद अपने मौक़िफ़ से पीछे हट गए और कहा कि आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत की तशकील के सिलसिले में फ़िलिस्तीनियों के पास सिर्फ़ यही एक रास्ता है कि वह इस्राईल के साथ समझौता कर लें और संयुक्तराष्ट्र के ज़रिये आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत तसलीम किये जाने की तजवीज़ से बचें। सहयूनियों की तरफ़ से आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत के रास्ते में रोड़े अटकाए जाने के दौरान फ़िलिस्तीनी ज़राए इबलाग़ ने एलान किया है कि फ़िलिस्तीनी इन्तिज़ामिया के सरबराह महमूद अब्बास और हमास के सियासी शोबे के सरबराह ख़ालिद मशअल फ़िलिस्तीन की आने वाली हुकूमत की तशकील और संयुक्तराष्ट्र की जनरल असेम्बली में आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत तसलीम किये जाने का मसला उठाए जाने के सिलसिले में आपस में बातचीत करेंगे।

उम्मीद की जा रही है कि मिस्र में आगे चलकर महमूद अब्बास और ख़ालिद मशअल के दरमियान होने वाले मुज़ाकरात में आज़ाद फ़िलिस्तीनी रियासत की तश्कील के मौज़ू के अलावा मुस्तक़बिल की हुकूमत की तश्कील, सियासी गिरफ़्तारियों के ख़ातमे और फ़िलिस्तीन की सेक्योरिटी के विभाग में तमाम जमाअतों की शिरकत जैसे मौज़ूआत पर भी बातचीत की जाएगी।

अल-क़ुद्स की अरब कालोनियों के इबरानी नाम रख दिये गए

मक़बूज़ा बैतुल मुक़द्दस की सहयूनी नगर-पालिका ने अल-क़ुद्स के मुख़तलिफ़ अरब इलाक़ों को इबरानी नामों से बदलने की दो हफ़्ते पहले शुरु की गई मुहिम पूरी कर ली है। इस मुहिम के दौरान बाबुल आमूद और मग़ारा सुलेमान के इलाक़ों के दरमियानी इलाक़ों के नाम बदल दिये गये। अल-क़ुद्स मीडिया सेण्टर के डायरेक्टर मुहम्मद सादिक़ ने ''मरकज़े इत्तेलाआते फ़िलिस्तीन'' के नुमाइन्दे को बताया कि इस्राईली नगर-पालिका ने बाबुल आमूद और मग़ारा सुलेमान के इलाक़े के दरमियान बाड़ लगाकर शहरियों को इलाक़े में दाख़िल होने से रोक दिया था।

नगर-पालिका के बुलडोज़रों ने इलाक़े में मौजूद इस्लामी तरीक़े पर बनी इमारतें गिरा दी हैं। मुहम्मद सादिक़ ने बताया कि फ़िलिस्तीनियों को रातोंरात अरब इस्लामी नामों के बजाए इबरानी नामों को देखकर बहुत ज़्यादा तकलीफ़ हुई है। इसी तरह मुख़तलिफ़ इलाक़ों में इबरानी नामों पर मुशतमिल बैनर लगा दिये गए हैं। उन्होंने कहा कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के ग़ार के नाम को बदलने की तक़रीब में सहयूनी नगर-पालिका के सरबराह ख़ुद हाज़िर होंगे। ग़ारे सुलेमान ओल्ड म्युनिसिपल्टी के अल-आमूद और अस्साहिरा दरवाज़ों के क़रीब स्थित है। ये ग़ार मस्जिदे अक़्सा से मिला हुआ है।

हज़रत गुफ़रानमआब[रह०] का देसा

19 रजब 1432हि० यानी हज़रत ग़ुफ़रानमआब की तारीख़े वफ़ात पर मुजद्दिदे मिल्लत आयतुल्लाहिल उज़मा सै० दिलदार अली नक़वी ग़ुफ़रानमआब (मुतवफ़्फ़ी 1235[हि०]) के ईसाले सवाब के लिए मजलिसे अज़ा-ए-सैय्यदुश्शोहदा[अ०], ख़ुद ग़ुफ़रानमआब[र०अ०] के तामीर कराए हुए इमामबाड़े में हुई, जिसे मौलाना सै० तक़ी रज़ा साहब ने ख़िताब फ़रमाया। मजलिस में बड़ी तादाद में मोमिनीन ने शिरकत की और मजलिस के आख़िर में हज़रत ग़ुफ़रानमआब[र०अ०] के ईसाल के लिए फ़ातेहाख़्वानी की गई इसके बाद वक़्फ़ इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब की तरफ़ से मोमिनीन के लिए खाने का इन्तिज़ाम भी किया गया।

नूरे हिदायत फाउण्डेशन में यौमे इमाम ख़ुमैनी[रह०]

4 जून 2010[ई०] को रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान आयतुल्लाहिल उज़मा रूहुल्लाह ख़ुमैनी[रह०] की बाईसवीं बरसी के मौक़े पर नूरे हिदायत फाउण्डेशन के दफ़्तर स्थित इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब में यौमे इमाम ख़ुमैनी[रह०] मनाया गया इस मौक़े पर मुख़तलिफ़ उलमा, उदबा और शोअरा ने अपने-अपने अन्दाज़ में इमाम ख़ुमैनी की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ पहलुओं का तज़किरा किया जल्से की इख़्तेतामी तक़रीर मौलाना असीफ़ जायसी सम्पादक मासिक शुआ-ए-अमल ने की। उन्होंने तक़रीर में कहा कि आज दुनिया के मुसलमानों का सर दुनिया में जितना भी ऊँचा है वह सिर्फ़ और सिर्फ़ इमाम ख़ुमैनी[रह०] के ज़रिये लाए हुए इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान का सदक़ा है। आख़िर में इमाम ख़ुमैनी[रह०] और दीगर शोहदा-ए-इन्क़ेलाबे इस्लामी के ईसाल के लिए फ़ातेहाख़्वानी की गई।

इराक़ में पन्द्रह लोगों को सज़ाए मौत

एक इराक़ी अदालत ने क़त्ल और फ़साद के इल्ज़ाम साबित होने पर पन्द्रह लोगों को सज़ाए मौत सुनाई है। ग़ैर मुल्की ख़बर देने वाले एक इदारे ने टेलीफ़ोन पर बात करते हुए इराक़ के सुप्रीम जूडिशियल कोंसिल के तर्जुमान अब्दुस्सत्तार बीरकदार ने कहा है कि सज़ाए मौत पाने वालों पर शिया अकसरियती इलाक़े रूदजेल में एक शादी में हमले का मंसूबा बनाने और हमला करने का इल्ज़ाम साबित हो चुका है जिसमें सत्तर लोग हलाक हो गए थे। उन्होंने कहा कि अदालत ने तमाम सुबूतों और बयानों के पूरा होने के बाद फ़ैसला किया है। उन्होंने कहा है कि सज़ा पाने वाले लोग अपनी सज़ा के ख़िलाफ़ एक महीने के अन्दर अपील कर कर सकते हैं। याद रहे कि 2006[ई०] में रूदजेल में शादी की तक़रीब पर हमले में सत्तर लोगों को क़त्ल किया गया था।

बहरैन में अवामी एहतेजाज जारी

पार्लियामेण्ट के सरबराह बातचीत पर लगाए गए

महर ख़बर रसां एजेंसी के हवाले से नक़ल किया गया है कि बहरैन के अवाम ने 16 जून को एक बड़े एहतेजाज में भरपूर शिरकत की। उधर बहरैन के बादशाह हम्द बिन ईसा आले ख़लीफ़ा ने बहरैन की पार्लियामेण्ट के ज़िम्मेदार ख़लीफ़ा बिन अहमद अज़-ज़ुहरानी को मुख़ालिफ़ीन के साथ बातचीत करने के ज़िम्मेदारी सौंप दी है।

बहरैन के बादशाह ने पार्लियामेण्ट के सरबराह से कहा कि नुमाइन्दों को आप पर भरपूर भरोसा है इसलिए मुख़ालिफ़ नुमाइन्दों के साथ मुज़ाकराती टीम का आपको सरबराह बनाता हूँ आप तमाम मुख़ालिफ़ नुमाइन्दों के साथ बातचीत को अंजाम दें ताकि मुल्क में सियासी इस्लाहात का अमल शुरु किया जा सके।

याद रहे कि बहरैन में पिछले मार्च में ट्यूनिश, मिस्र और यमन की तरह एहतेजाज शुरु हो गए थे, बहरैनी अवाम के पुर-अमन एहतेजाज को कुचलने के लिए सऊदी अरब ने अपनी फ़ौजें बहरैन भेज दीं। जिन्होंने बहरैन में बड़े पैमाने पर क़त्लेआम किया। लेकिन एजतेजाजों का सिलसिला अब भी जारी है और बहरैनी हुकूमत मुख़ालिफ़ीन के साथ बातचीत करने पर मजबूर हो गई है।

बहरैनी हुकूमत के संगीन जुर्मों का पर्दा फ़ाश

महर ख़बर रसां एजेंसी ने फ्रांसीसी ख़बर देने वाली एजेंसी के हवाले से नक़ल किया है बहरैन में अमरीका नवाज़ आले ख़लीफ़ा हुकूमत के भयानक और संगीन जुर्मों का मज़ीद इन्केशाफ़ हुआ है जिसमें बहरैन की ज़ालिम व जाबिर और अमरीका नवाज़ हुकूमत ने 47 बहरैनी डाक्टरों और नर्सों को वहशियाना और अलमनाक शिकंजा दिया है।

एक शख़्स ने नाम न ज़ाहिर करने की शर्त पर बताया है कि आले ख़लीफ़ा हुकूमत ने उन्हें जिस्मी और रूही शिकंजे देकर एतेराफ़ात पर दस्तख़त कराए हैं। बहरैन की जेल में क़ैद डाक्टरों को इमेरजेन्सी क़ानून ख़त्म करने के बाद अदालत में पेश किया गया है बहरैन के अवाम मुल्क में जमहूरी निज़ाम और बहरैन के इस्तेक़लाल का मुतालबा कर रहे हैं। बहरैनी अवाम के पुर-अम्न एहतेजाज को कुचलने के लिए सऊदी अरब के कई हज़ार फ़ौजी बहरैन में मौजूद हैं जिन्होंने अब तक 30 मस्जिदों समेत 100 से ज़्यादा मुक़द्दस मक़ामात को गिरा दिया है और सऊदी फ़ौजियों ने क़ुरआन मजीद की बड़े पैमाने पर बेहुरमती की है।